महात्मा गांधी पर विशेष

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 362 जनवरी–2026

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कला-साहित्य

बालेंदु शर्मा दाधीच जितेंद्र भाटिया वीरेंद्र यादव
सुनील कुमार शर्मा विनोद शाही
प्रस्तुति : जीतेश्वरी

आलेख

आदिवासी समाज में रामकथा

कहानियां

सत्यनारायण पटेल दिनेश पाठक
अरुणेंद्र नाथ वर्मा चाहत अन्वी
मोहम्मद इम्तियाज (पंजाबी)
ममतामयी चौधरी (ओड़िया)
न्यूगी वा थ्योंगो (केन्याई)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 362, जनवरी 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

क्या एआई हमारे बदले हँस सकता है : **संपादकीय** 5

कहानियां

दादी के ठुमके : **सत्यनारायण पटेल** 12
दो घरों का एक घर : **दिनेश पाठक** 16
आत्मक्षरण : **अरुणेंद्र नाथ वर्मा** 24
तिरिल : **चाहत अन्वी** 33
हशमत चाचा (पंजाबी) : **मुहम्मद इम्तियाज**
(अनुवाद : **तरसेम**) 40
जहर (ओड़िया) : **ममतामयी चौधरी**
(अनुवाद : **प्रदीप कुमार राय**) 43

कविताएं

अरुण आदित्य/शंकरानंद/प्रेम रंजन अनिमेष/श्वेता शर्मा/राजहंस सेठ /मुख्तार अहमद/दीपक जायसवाल/गीता मलिक/इंदु श्रीवास्तव/जितेंद्र जलज 50
मराठी कविता : **मंगेश पडगांवर**/अनुवाद : **विपिन पवार** 60

परिचर्चा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कला–साहित्य :
बालेंदु शर्मा दाधीच/जितेंद्र भाटिया/वीरेंद्र यादव/सुनील कुमार शर्मा/विनोद शाही (प्रस्तुति : **जीतेश्वरी**) 62

पुण्यतिथि

महात्मा गांधी और मशीन (अनुवाद : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**) 84

लेख

आदिवासी समाज में रामकथा : **हरि राम मीणा** 90

विश्वदृष्टि

काली चिड़िया (केन्याई कहानी) : न्गूगी वा थ्योंगो
(अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद : **बालमुकुंद नंदवाना**) 95

समीक्षा संवाद

स्त्री कथाकारों की आंच पर देश : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**
(पूनम सिंह, शर्मिला जालान और वंदना गुप्ता की पुस्तकें) 102

सोशल मीडिया 111

विविध

पाठक संसद/किताबें 114

लघुकथा

बराबरी : **रविशंकर सिंह** 23

बतरस

कथा : नगरवधू की : **कुसुम खेमानी** 117

देश-देशांतर

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ रूमी (सूफी)

मल्टी मीडिया

त्रिलोचन की कविता
चंपा काले-काले अक्षर नहीं चिन्हती का चित्रपाठ

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।
● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

क्या एआई हमारे बदले हँस सकता है

गांव में एआई आया। किसान ने पूछा– 'मौसम बता सकते हो?' एआई ने कहा– 'हां'। किसान– तो पहले यह बताओ कि मेरा बैल तुम्हें घूर क्यों रहा है?' एआई चीखा– 'सिस्टम अलर्ट'... एक्जिट करो!' विद्यार्थी खुश हैं कि एआई उनका होमवर्क कर देगा, बल्कि वह पीएचडी की थीसिस भी लिख देगा!

क्या एआई हमारे बदले हँस सकता है? मनुष्य जिस बात पर हँसते–हँसते पेट पकड़ लेता है, एआई उस बात पर दस सेकेंड सोचकर बताएगा कि यह मजाक किस श्रेणी में आता है। वह सूचित करेगा कि यह व्यंग्य, तंज, विनोद, उपहास, आत्मव्यंग्य है या आदमी की निरी बेवकूफी। फिर वह एक प्रोसेस्ड हँसी निकालेगा जैसे सरकारी दफ्तर की कोई फाइल हो।

मनुष्यों की हँसी में जो स्वाभाविकता, निश्छलता और अचानक फूट पड़ने वाला हर्ष है वैसी हँसी एआई के पास नहीं है। इसकी संभावना जरूर है कि भविष्य में एआई ही व्यवस्थित हँसी के मॉडल दे और इंसान स्वाभाविक रूप से हँसना भूल जाए!

एआई इतना आज्ञाकारी है कि यदि उसे आप सोचने को कह दें तो वह पहले पूछेगा, 'कितने सेकेंड?' लोग कहते हैं, एआई दुनिया बदल देगा। किस दिशा में बदलेगा, किस दिशा में बदल रहा है? एआई को तब काफी परेशानी होगी जब कोई संपादक उससे कहेगा– अगले अंक के लिए कोई रचना दो! वह गोल घूमता दिखेगा। ऐसा है एआई कि वह साथ बैठकर कॉफी नहीं पी सकता, और संसार से एक दिन हमारी हँसी जरूर छीन लेगा जैसे घरों से आंगन गायब हो गया।